THE SCIENCE WORLD
A Monthly e Magazine
ISSN:2583-2212
April 2024 Vol.4(4), 1416-1420

Popular Article

इबोला के प्रकोप से अवगत रहें

Dr. R.N. Bhatia, Dr. A.R. Mecvan
College of Veterinary Science and Animal husbandry, Kamdhenu university, Anand.
https://doi.org/10.5281/zenodo.10981340

इबोला विषाणु रोग (ई.वी.डी) अफ्रीकी महाद्वीप में कभी-कभी फैलने वाला प्रकोप है. ई.वी.डी सबसे अधिक मानव और अमानवीय स्तनपान वाले प्राणियो (बंदर, गोरिल्ला और चिंपांजी) को प्रभावित करता है. यह संक्रमण एक इबोलाविषाणु नामक समूह के कारण होता है. इबोला विषाणु रोग (ई.वी.डी), जिसे पहले इबोला रक्तस्रावी बुखार के रूप में जाना जाता था और ये एक दुर्लभ लेकिन गंभीर, मानव आबादी के लिए बहुत खतरनाक है. ई.वी.डी के मामले में मृत्यु दर लगभग ७५-८०% है.

रोग के प्रकोप का इतिहास

इबोला विषाणु रोग (ई.वी.डी) की खोज १९७६ में तब हुई जब मध्य अफ्रीका में घातक रक्तस्रावी बुखार के दो प्रकोप हुए. डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ़ कांगो के इबोला नदी के पास एक गांव में में पहला प्रकोप हुआ, जिसने विषाणु को अपना नाम दिया. दूसरा प्रकोप दक्षिण सूडान में हुआ. भारत में अभी तक किसी भी मामले की पुष्टि नहीं हुई है.

डब्ल्यू.एच.ओ द्वारा प्रसिद्द हुआ इबोला विषाणु का कुल प्रकोप का डाटा

वर्ष	देश	ई.वी.डी	कुल मामले	मृत्य	मृत्यु दर
२०१८-२०१९	डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ़ कांगो	जायरा	तफतीश जारी हे		
२०१८	डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ़ कांगो	जायरा	५४	३३	६१%
२०१७	डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ़ कांगो	जायरा	८८	४	५०%
२०१५	इटली	जायरा	१	०	०%
२०१४	स्पेन	जायरा	१	०	०%
२०१४	यूनाइटेड किंगडम	जायरा	१	०	०%
२०१४	अमेरिका	जायरा	४	१	२५%
२०१४	सेनेगल	जायरा	१	०	०%
२०१४	माली	जायरा	८	६	७५%
२०१४	नाइजीरिया	जायरा	२०	८	४०%

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 13.04.2024

वर्ष	देश	ई.वी.डी	कुल मामले	मृत्य	मृत्यु दर
२०१४-२०१६	सिएरा लिओन	जायरा	१४१२४	३९५६	२८%
२०१४-२०१६	लाइबेरिया	जायरा	१०६७५	४८०९	४५%
२०१४-२०१६	गिनी	जायरा	३८११	२५४३	६७%
२०१२	डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ़ कांगो	बुन्दिबुग्यो	५७	२९	५१%
२०१२	यूगांडा	सूडान	७	४	५७%
२०१२	युगांडा	सूडान	२४	१७	७१%
२०११	युगांडा	सूडान	१	१	१००%
२००८	डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ़ कांगो	जायरा	३२	१४	४४%
२००७	ययूगांडा	बुन्दिबुग्यो	१४९	३७	२५%
२००७	डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ़ कांगो	जायरा	२६४	१८७	७१%
२००५	कांगो	जायरा	१२	१०	८३%
२००४	सूडान	सूडान	१७	७	४१%
२००३ (नवंबर-डिस.)	कांगो	जायरा	३५	२९	८३%
२००३ (जान.-अप्रैल)	कांगो	जायरा	१४३	१२८	९०%
२००१-२००२	कांगो	जायरा	५९	४४	७५%
२००१-२००२	गैबन	जायरा	६५	५३	८२%
२०००	यूगांडा	सूडान	४२५	२२४	५३%
१९९६	दक्षिण अफ्रीका	जायरा	१	१	१००%
१९९६ (जुला.-डिस.)	गैबन	जायरा	६०	४५	७५%
१९९६ (जान.-अप्रैल)	गैबन	जायरा	३१	२१	६८%
१९९५	डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ़ कांगो	जायरा	३१५	२५४	८१%
१९९४	कोटे डी आइवरी	टाइ फारेस्ट	१	०	०%
१९९४	गैबन	जायरा	५२	३१	६०%
१९७९	सूडान	सूडान	३४	२१	६५%
१९७७	डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ़ कांगो	जायरा	१	१	१००%
१९७६	सूडान	सूडान	२८४	१५१	५३%
१९७६	डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ़ कांगो	जायरा	३१८	२८०	८८%

विषाणु का वर्गीकरण

विषाणु का क्रम मोनोनगैविरेल्स हे, परिवार फ़िलोविरिड़े और जाती इबोला विषाणु है, ये एक सिंगल स्ट्रेंडेड नेगेटिव सेंस आर.एन.ए विषाणु हे. वर्तमान इबोला विषाणु की जाती में निम्नलिखित पांच प्रजातियां शामिल हैं.

जायरा इबोला विषाणु

सूडान इबोला विषाणु

टाइ फारेस्ट इबोला विषाणु

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 13.04.2024

बूंदीबुग्यो इबोला विषाणु

रेसटोन इबोला विषाणु

प्राकृतिक मेजबान कोन हे?

इबोला विषाणु का प्राकृतिक मेजबान एक चमगादड़ है, और यह मनुष्यों के साथ-साथ गोरिल्ला और चिंपांजी में भी इबोला विषाणु के संक्रमण का कारण बनता है.

संक्रमण के संचरण के तरीके

संक्रमण का प्राथमिक स्रोत- विषाणु जानवरों से मनुष्यों में फेलता है. वायरस संसर्गजन्य है. चमगादड़ एक प्राकृतिक मेज़बान हे.

संक्रमण के माध्यमिक स्रोत- विषाणु मानव से मानव में फैलते है. जेसे की..

- संक्रमित व्यक्ति के तरल पदार्थों जैसे पसीना, लार, वीर्य, रक्त या शरीर के अन्य अंगों के साथ सीधे संपर्क में आने से विषाणु का संक्रमण फेल सकता हे.
- सुइ या अन्य चिकित्सा उपकरण जैसी वस्तुओं के सीधे संपर्क से जो संक्रमित व्यक्तियों से दूषित हो चुके हैं उससे भी विषाणु का संक्रमण हो सकता हे.
- संक्रमित व्यक्ति का मृत शरीर भी संक्रमण का एक स्रोत हो सकता है.

जानवरों में इबोला विषाणु संक्रमण के सामान्य लक्षण

भोजन की अरुचि

खांसी

उच्च बुखार

कमजोरी

खून बहने से मौत

मृत्यु दर १००% तक

मानव में इबोला विषाणु संक्रमण के सामान्य लक्षण

बुखार

सरदर्द

कमजोरी

जोड़ों और मांसपेशियों में दर्द

दस्त

उल्टी

पेट में दर्द होना

भूख में कमी

यह रोग आगे चलकर रक्तस्राव के चरण तक पहुंच जाता है, जिससे आंखे, नाक, कानों के साथ-साथ शरीर के अंदर रक्तस्राव भी होता है.

निदान

संक्रमण के शुरुआती चरणों में रोग का निदान करना मुश्किल है क्योंकि शुरुआती लक्षण इबोला विषाणु के संक्रमण के प्रति असंगत हैं इसलिए इसका निदान कई प्रयोगशाला के परीक्षणों के माध्यम से किया जा सकता है.

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 13.04.2024

- एंजाइम लिंक्ड इम्युनो सोर्बट एसे टेस्ट
- एंटीजन डिटेक्शन टेस्ट
- पोलीमरेज़ चैन रिएक्शन टेस्ट
- सेल कल्चर तकनिकी टेस्ट
- इलेक्ट्रान माइक्रोस्कोपी

इबोला विषाणु संक्रमण के लिए रोकथाम और नियंत्रण रणनीति

- सुरक्षात्मक कपड़े पहनना (जैसे मास्क, दस्ताने, गाउन और काले चश्मे)
- उपकरणों की साफसफाई के लिए कीटाणुनाशक रसायनों का नियमित उपयोग करे
- धुमन प्रकिया के ज़रिये पर्यावरण का और कीटाणुनाशक रसायन द्वारा इलाके की साफ सफाई करनी चाहिए
- मृत शरीर भी इबोला संचारित करते हैं. इसलिए यदि संभव हो तो उन्हें सुरक्षात्मक कपड़े पहनने के बाद ही छुए.
- साबुन या प्रक्षालक से हाथ बार बार धोने चाहिए
- संक्रमित व्यक्ति या बीमार व्यक्ति से सुरक्षित दूरी बनाए रखनी चाहिए
- अज्ञात स्रोत के कच्चे मांस खाने से बचें
- बीमार व्यक्तियों के रक्त और शरीर के तरल पदार्थ (जैसे मूत्र, मल, लार, पसीना, उल्टी, स्तन का दूध, वीर्य और योनि द्रव) के संपर्क से बचें.
- संभावित रूप से संक्रमित जानवर पर नज़र रखे
- फार्म पर मानव प्रविष्टियों के लिए स्वच्छता आवश्यक है
- यदि प्रकोप का संदेह है, तो पशु परिसर को तुरंत अलग किया जाना चाहिए

अस्पतालों में संक्रमण को नियंत्रित करना

- ई.वी.डी रोगियों की देखभाल करते समय स्वास्थ्य कर्मचारियों को हमेशा मानक सावधानी बरतनी चाहिए.
- बुनियादी हाथ स्वच्छता, श्वसन स्वच्छता, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों के उपयोग की आवश्यकता होनी चाहिए
- बायोमेडिकल कचरे का उचित निकाल करना चाहिए
- ई.वी.डी रोगी कक्ष के साथ ही अस्पताल के परिसर की साफसफाई करनी चाहिए
- ई.वी.डी रोगियों के स्वास्थ्य की देखभाल करते कर्मचारियों को मास्क, चश्मे और साफ लम्बे गाउन सहित दस्ताने आवश्यक होने चाहिए.

इलाज

- वर्तमान में इबोला विषाणु संक्रमण के लिए कोई विशिष्ट दवा उपलब्ध नहीं है.
- इलाज करने के लिए सहायक देखभाल की सिफारिश की जाती हे.
- एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग करके दुसरे जीवाणु संक्रमण को रोकें

टीका

अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन (एफ.डी.ए) ने दिसंबर २०१९ में इबोला का टिका आर.वी.एस.वी-ज़े.इ.बी.ओ.वी (ट्रेडेनम एर्वीबो) को मंजूरी दे दी. आर.वी.एस.वी-ज़े.इ.बी.ओ.वी टिका केवल जायरा ईबोला विषाणु

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 13.04.2024

प्रजातियों के खिलाफ सुरक्षित है। यह इबोला के लिए टीके की पहली एफडीए मंजूरी है.

भारत में आपातकालीन देखभाल की स्थापना

भारत सरकार ने एक 'इमरजेंसी हेल्पलाइन ऑपरेशन सेंटर' खोला है जो ट्रैकिंग और निगरानी प्रणाली प्रदान करता है. नई दिल्ली में राम मनोहर लोहिया अस्पताल और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (ICMR) द्वारा ई.वी.डी से संक्रमित व्यक्तियों का प्रबंधन और उपचार के लिए व्यवस्था की जाती है. हेल्पलाइन नंबर हैं (०११) -२३०६१४६९, ३२०५ और १३०२

संदर्भ:

https://www.nhp.gov.in/disease/digestive/other-gastro-intestinal/ebola-virus-disease-evd
https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pubmed/30609455
https://www.who.int/news-room/fact-sheets/detail/ebola-virus-disease
https://www.cdc.gov/vhf/ebola/history/summaries.html
इबोला विषाणु रोग के बारे में दिशानिर्देश के लिए नीचे दिए गए लिंक पर जाएं
https://www.nhp.gov.in/disease/digestive/other-gastro-intestinal/ebola-virus-disease-evd

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 13.04.2024